ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(6): 443-446
www.allresearchjournal.com
Received: 03-04-2023
Accepted: 12-05-2023

मो. उस्मान
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. शगुफ़्ता ज़बीन
हायक प्राध्यापिका, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी, कामेश्वरनगर दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मो. उस्मान
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा दर्शन और सूफी दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

मो. उस्मान एवं डॉ. शगुफ्ताह जबीं

सारांश
शिक्षा दर्शन एक ऐसा रचनातन्त्र विषय है जिसके अन्तर्गत शिक्षा की समस्या का अध्ययन करके उसका हल प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षा दर्शन एक व्यापक और गतिशील विषय है इसे कुछ लोग दर्शन की एक शाखा या अंग मानते हैं इसे दर्शन की शाखा मानते हैं जो शिक्षा सम्बन्धी विषयों के दार्शनिक दृष्टिकोण का अध्ययन करते हैं जिस प्रकार शिक्षा दर्शन को कुछ लोग दर्शन का एक अंग मानते हैं। इसी प्रकार दूसरे लोग इसे शिक्षाशास्त्र रूप देते हैं शिक्षा दर्शन को अधिकांश लोग आजकल एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकार करते हैं, अतः शिक्षा दर्शन वह विज्ञान है जिसमें शिक्षा के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार करके उनके समाधान के लिए विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सूफी दर्शन में इस्लाम के भीतर रहस्यमय परंपरा, सूफीवाद के लिए अद्वितीय विचार के स्कूल शामिल हैं, जिसे इसके अनुयायियों के अनुसार तसव्वुफ़ या फ़क्र भी कहा जाता है। सूफीवाद और इसकी दार्शनिक परंपरा इस्लाम की सुन्नी और शिया दोनों शाखाओं से जुड़ी हो सकती है। यह सुझाव दिया गया है कि सूफी विचार आठवीं शताब्दी ईस्वी में मध्य पूर्व से उभरा, लेकिन अनुयायी अब दुनिया भर में पाए जाते हैं।

कूटशब्दः वर्तमान परिप्रेक्ष्य, शिक्षा दर्शन, सूफी दर्शन

प्रस्तावना
भारतीय शिक्षा पद्धति प्राचीन काल मे अत्यंत समुन्नत व उत्कृष्ट थी। अतएव प्राचीन काल मे भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। वस्तुतः यह शिक्षा मनुष्य को न केवल जीवन के यथार्थ का दर्शन कराती थी, वरन यह शिष्य को इस योग्य बनाती थी कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अंत मे मोक्ष को प्राप्त कर सके।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में अ प्रत्यय लगने से बना है। शिक्ष् का अर्थ हैदसीखना और सिखाना, इसलिए शिक्षा का अर्थ हुआदसीखने-सिखाने की क्रिया। यदि हम शिक्षा वेफ लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द एजूवेफशन पर विचार करें तो भी उसका यही अर्थ निकलता है। एजूवेफशन शब्द लैटिन भाषा वेफ एजूवेफटम शब्द से बना है और एजूवेफटम शब्द उसी भाषा वेफ तथा ड्यूको दो शब्दों से मिलकर बना है। एका अर्थ हैदअंदर से और ड्यूको का अर्थ हैदआगे बढ़ाना, इसलिए एजूवेफशन का अर्थ हुआदबच्चे की आंतरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना।

उद्देश्यपूर्ण शिक्षा से समय और शक्ति दोनों का सदुपयोग होता है और शिक्षा की प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती है।

स्पष्ट उद्देश्यों वेफ आधार पर ही पाठ्यक्रम की रचना होती है और शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाता है। उ़द्देश्यविहीन शिक्षा से न शिक्षण की पाठ्यचर्या तैयार की जा सकती है, न शिक्षण की व्यूह रचनाओं का उचित प्रयोग किया जा सकता है, न शिक्षा वेफ साधनों का चयन किया जा सकता है और न ही बालकों वेफ व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है।

प्राचीन शिक्षा वस्तुतः गुरुकुल शिक्षा पद्धति थी। विद्या र्थी अपने घर से दूर अपने गुरु या गुरुओं के आश्रम अर्थात गुरुकुल मे रहकर विद्या ध्ययन करते थे। आचार्य एवं गुरु कहा जाता था तथा छात्र को अंतेवासी, ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा हिंदू धर्म में ही नही, वरन जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म आदि मे भी है।

शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्म अनुशासन तथा आध्यात्मिकता की ओर मोड़ना भी था तथा अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति ही था। नैतिक मूल्य, चारित्रिक उत्थान, संस्कृति एवं परंपरा के तत्व इस शिक्षा पद्धति के मुख्य गुण थे। सामान्यतया गुरु तथा शिष्य के रिश्ते को बहुत पवित्र माना जाता था। किसी की शिक्षा के अंत में, एक शिष्य गुरुकुल छोड़ने से पहले गुरु दक्षिणा प्रदान करता है। गुरुदक्षिणा एक पारंपरिक रीति थी जो गुरु की स्वीकृति, सम्मान और धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए दीजाती थी। आधुनिक काल मे स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी गुरुकुल परंपरा मे शिक्षण किया था जबकि बेल्जियम मे कुछ शिक्षा केन्द्र आज भी वैदिक गणित, कला, संगीत, नक्षत्र विज्ञान, संस्कृत तथा योग की शिक्षा प्रदान करने के लिए 8 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बालकों को गुरुकुल व्यवस्था मे शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्राचीन विश्वविद्यालयों मे 6 सदी ईसा पूर्व में तक्षशिला विश्वविद्यालय चिकित्सा का विश्वविख्यात शिक्षा केंद्र था। इसी प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय तर्क शास्त्र का, बल्लभी विश्वविद्यालय विधि, चिकित्सा, अर्थशास्त्र का तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय तांत्रिक बौद्ध धर्म का प्राख्यात शिक्षा केंद्र था। ये सभी विश्वविद्यालय वस्तुतः गुरुकुल ही थे। इसके अतिरिक्त नदिया, मिथिला, प्रयाग, अयोध्या तथा ओदंतपुरी भी शिक्षा के बड़े केंद्र थे। शिक्षा केंद्र तीन प्रकार के थे। गुरुकुल, परिषद तथा सम्मेलन।

दर्शन शास्त्र मे योग, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, पूर्व मीमांषा तथा उत्तर मीमांशा जैसे विकास विश्व में प्रसिद्ध हुये थे। गुप्त काल में ब्राम्हणों को जो भूमि दान दी जाती थी उसे अग्रहार कहते थे। यह भूमि गुरुकुल थे तथा शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने। हर्षचरित मे गुरुकुल का उल्लेख मिलता है। अलबरुनी के विवरण से ज्ञात होता है कि पूर्व मध्य युग मे शिक्षा ले लिए कई गुरुकुलों की स्थापना की गई थी।

सूफी विचार का उद्भव आमतौर पर इस्लामी पैगंबर मुहम्मद के जीवन के बाद सातवीं और आठवीं शताब्दी ईस्वी में मध्य पूर्व के ऐतिहासिक विकास से जुड़ा हुआ है, और इसका विकास उसके बाद की सभी शताब्दियों में हुआ। दसवीं और 12वीं शताब्दी के बीच, सूफीवाद मुस्लिम दुनिया में व्यापक रूप से फैला हुआ अनुशासन बन गया। सूफी दर्शन पर एक प्रभावशाली प्रारंभिक लेखक मुस्लिम विद्वान और धर्मशास्त्री अल-ग़ज़ाली (1058-1111) थे। उन्होंने स्वयं की अवधारणा और उसके दुख और सुख के कारणों पर चर्चा की। मुस्लिम जगत में सूफ़ीवाद एक रहस्यमयी विचारधारा के रूप में उभरा और विकसित हुआ,एरिक हैनसन और करेन आर्मस्ट्रांग कहते हैं, इस्लाम की मुख्यधारा सुन्नी और शिया संप्रदायों में कुछ हद तक छिपी हुई परंपरा, संभवतः उमय्यद और अबासिड समाजों की बढ़ती सांसारिकता" की प्रतिक्रिया में है। सूफीवाद को अपनाया गया और फिर विशेष रूप से इस्लामी राज्यों के सीमांत क्षेत्रों में इसका विकास हुआ, जहां इसके फकीरों और दरवेशों की तपस्या ने उन लोगों को आकर्षित किया जो पहले से ही हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और मठों की परंपराओं के आदी थे। ईसाई धर्म 13वीं शताब्दी के अंत तक, सूफीवाद पूरे इस्लामी सभ्यता में आध्यात्मिक जागृति का एक सुपरिभाषित विज्ञान बन गया था, जो एक "इस्लामी स्वर्ण युग" था। इस काल में इस्लाम की सभ्यता का कोई भी महत्वपूर्ण क्षेत्र सूफ़ीवाद से अप्रभावित नहीं रहा। कई तारिक़ह (सूफी संप्रदाय) की स्थापना की गई। इसके अलावा, हंकारी, इब्न अरबी और अबू सईद मुबारक मखज़ूमी जैसे उल्लेखनीय सूफी मुस्लिम दार्शनिकों, धर्मशास्त्रियों और न्यायविदों के एक वर्ग ने इस युग का नेतृत्व किया, जिन्होंने दार्शनिकों और प्रतिभाओं के ऐतिहासिक नमूनों को प्रशिक्षित और तैयार किया, जो अब दुनिया भर में पढ़े जाते हैं, जैसे एविसेना, अल- ग़ज़ाली, आदि सूफी दर्शन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण छाप अब्दुल कादिर जिलानी ने अपने न्यायशास्त्र और सूफीवाद के दर्शन से बनाई है जिसने उन्हें सूफी आदेशों को परिभाषित करने के लिए प्रेरित किया। जिलानी का अपनाया गया आदेश कादिरिया था और उन्होंने जो शाखा शुरू की वह बाद में सरवरी कादिरी के नाम से जानी जाने लगी। इस युग में कई अन्य आदेशों की भी स्थापना की गई।

10वीं और 19वीं शताब्दी के बीच सूफी अत्यधिक प्रभावशाली और इस्लाम फैलाने में बहुत सफल रहे, विशेष रूप से मध्य

पूर्व और उत्तरी अफ्रीका, बाल्कन और काकेशस, भारतीय उपमहाद्वीप और अंत में मध्य में मुस्लिम दुनिया के सबसे दूर के इलाकों में। पूर्वी, और दक्षिण पूर्व एशिया। कुछ विद्वानों ने तर्क दिया है कि सूफी मुस्लिम तपस्वियों और फकीरों ने 10वीं और 12वीं शताब्दी के बीच तुर्क लोगों और फारस में मंगोल आक्रमणकारियों को इस्लाम में परिवर्तित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

भारत मे मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार हुआ, मकतब तथा मदरसा की स्थापना होने लगी। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जबकि मदरसा उच्च शिक्षा के। इन दोनों में प्रधानता से धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। परन्तु मुस्लिम कालीन शिक्षा मे पुस्तकालयों का विकास शिक्षा के लिए एक बड़ी पूंजी था। अध्यापन फारसी भाषा मे होता था जबकि अरबी अनिवार्य विषय था। केवल शहजादा राजव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण तथा कानून आदि का ज्ञान अर्जित करते थे। दंड शिक्षा का विशेष अंग था। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे।

मुस्लिम शासको के संरक्षण के अभाव मे संस्कृत, नाटक, संगीत, व्याकरण तथा भारतीय साहित्य की शिक्षा चुपचाप चलती रही। सूफी दर्शन व उसकी शिक्षा जो दरगाहों मे दी जाती थी जहां पीर व मुरीद थे। जो शिष्य व गुरु के सम्बन्धों को दर्शाती है।

1781 मे कलकत्ते मे कलकत्ता मदरसा की स्थापना, 1792 मे जोनाथन डंकन द्वारा "संस्कृत विद्यालय" की स्थापना, 1813 मे आज्ञापत्र के अनुसार शिक्षा मे धन व्यय करने का विधान अँग्रेजी शिक्षा के बढ़ते कदम की निशानी थी। 1830 मे लार्ड मैकाले के तर्को ने अँग्रेजी शिक्षा को भारतीय समाज मे प्रविष्ट कराया। 1854 के वुड्स डिस्पेच मे अँग्रेजी के साथ संस्कृत, अरबी-फारसी का अध्ययन आवश्यक बताया गया।

1857 मे कलकता, बंबई तथा मद्रास मे विश्वविद्यालय बनाए गए। 1882 मे हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के लिए उचित सुझाव दिये। परंतु इसे नगर पालिका व ग्राम पालिका के भरोसे छोड़ा दिया गया अतः शिक्षा का स्टार गिरता गया। तब भारतीयों ने इसमे सुधार का प्रयास किया। 1870 मे बाल गंगाधर तिलक ने पूना में फर्ग्युसन कालेज, 1886 मे आर्य समाज द्वारा लाहौर मे दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज तथा 1898 मे काशी में श्रीमती एनी बेशेंट द्वारा सेंट्रल हिन्दू कालेज स्थापित किए गए। 1894 मे कोल्हापूर रियासत मे राजा छत्रपति शाहू जी महाराज ने दलितों के लिए विद्यालय खोले। 1904 मे लार्ड कर्जन ने विश्वविद्यालय कमीशन का प्रस्ताव पारित किया। इसके अब न केवल विश्वविद्यालय बल्कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा की उन्नति हुई। 1916 मे बनारस हिन्दू विश्व विद्या लय तथा मैसूर विश्व विद्यालय, 1918 मे ओसमानिया विश्व विद्या लय, 1920 मे अलीगढ़ मे मुस्लिम विश्व विद्यालय, 1921 मे ढाका व लखनऊ विश्व विद्यालय, 1922 मे दिल्ली, 1923 मे नागपुर, 1927 मे आंध्र प्रदेश मे तथा 1926 मे अन्नामलाई विश्व विद्यालय स्थापित हुये।

1938 मे बुनियादी शिक्षा के नाम से प्रसिद्ध हुई। सात से ग्यारह वर्ष के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य हो। शिक्षा मातृभाषा मे हो। हिन्दुस्तानी पढ़ाई जाय। चरखा करघा कृषि लकड़ी का काम शिक्षा का केंद्र हो जिसकी बुनियाद पर साहित्य, भूगोल, इतिहास की पढ़ाई हो। इस का नाम "नई तालीम" रखा गया।

फिर सार्जेंट शिक्षा (1945)का निर्माण हुआ। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। डिग्री पाठ्यक्रम तीन वर्ष का हो। 6 से 14 वर्ष की अवस्था के बालक बालिकाओ की शिक्षा अनिवार्य कर दी गइ भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मुख्यरुप से प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा शामिल है। प्रारंभिक शिक्षा में आठ साल की, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा में से प्रत्येक में दो साल की शिक्षा होती है। उच्च शिक्षा भारत उच्चतर माध्यमिक शिक्षा या 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रारम्भ होती है। स्ट्रीम के अनुसार भारत में स्नातक पूरा करने में तीन से पांच साल लग सकते हैं।

आमतौर पर स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम दो से तीन साल की अवधि तक के होते हैं। पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा करने के बाद विभिन्न शैक्षणिक में शोध किया जा सकता है।

भारत में काफी अच्छे शिक्षण संस्थान हैं जो दुनिया के शैक्षिक संस्थानों से बेहतरीन प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं यथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान, नेशनल लॉ स्कूल, तथा जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार हेतु सरकार निरन्तर नयी नीतियाँ, पाठयक्रम तथा एक्ट पारित कर व लागू कर शिक्षा मे सुधार के प्रयास कर रही है। शिक्षक अब वेतनभोगी है उसे न केवल अध्यापन की विधियों के साथ पाठ्यक्रम पूरा करने, शतप्रतिशत परिणाम देने का दबाव निरंतर रहता है।

शिक्षार्थी केवल शिक्षार्थी है उसे जो पाठ्यक्रम मिलता है तथा जिस प्रकार की व्यवस्था शिक्षा प्रलाणी प्राप्त होती है वह उसका अंग बन जाता है। वस्तुतः इसका कारण हम सब मे है, क्योंकि आज शिक्षा की सफलता एक चिकित्सक व अभियंता के सांख्यिकी आकड़े से निर्धारित करते हैं। अक्सर हम पूंछते है कि इस विद्यालय से कितने चिकित्सक व अभियंता बने है। परन्तु ये नही पूंछते कि कितने शिक्षार्थी अच्छे नागरिक बने, कितने अपने जीवन मे सफल हुये? विज्ञान स्ट्रीम सब लेना चाहते है। मानविकी स्ट्रीम कोई नही। क्यों? वे चिकित्सक या अभियंता बनाना चाहते हैं। विवाह के लिए कन्या ऐसे अधिकतम तथा ऊपरी आय वाले वर को चुनती है। वह अच्छे सुचरित्र व सुसंस्कारित पति नही ढूढ़ती है। विद्यार्थी वह पद चुनता है जिसमे अधिक आय हो। न कि वह पद जो उसके व्यक्तित्व व क्षमता के अनुसार हो। अभिभावक वह शिक्षा प्रदान करना चाहता है जो कैरियर बनाए। वह इस विषय मे बवनदेमसवत या परामर्शदाता या केरियर परामर्शदाता का परामर्श या किसी शिक्षक की राय भी नही लेना चाहता है। समाज मे हम उसे सफल मानते है जो अधिक वैभवशाली जीवन जी रहा हो, अधिक भौतिक संपदा अर्जित कर चुका हो।

निष्कर्ष

समाज को अपने शिक्षा के प्रति अपने उद्देश्य पुनः निर्धारित करने की। आवश्यकता है पुनः समाज जाने कि विद्यालय विद्यार्थी व शिक्षक तथा संसद मे बैठे सांसद आदि समाज के अंग हैं। शिक्षा वही उत्पादित करेगी जो समाज की मान्यता होगी शिक्षा उससे अछूती नही रहेगी। निष्कर्ष यह है कि विद्यालय निरंतर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रयासरत हैं। कोई भी शिक्षा व्यवस्था आदर्श शिक्षा व्यवस्था नही होती है हमे निरंतर प्रयास करना होगा कि हम उन दोषो को न्यून करने करने का तथा विद्यार्थियों का अधिकतम विकास करने का। यही प्रयास हमे वैश्विक शक्ति बनाने मे सफलीभूत हुये हैं।

संदर्भ-सूची

1. ए बी सी चौधरी, हफीज-उर-रहमान (2013)। पाकिस्तान में तीर्थस्थलों पर आध्यात्मिकता के दर्शन को समझना। बेनेट में, क्लिंटन; रैमसे, चार्ल्स एम. (सं.). दक्षिण एशियाई सूफी: भक्ति, विचलन और नियति(पहला संस्करण)। लंदनऔरन्यूयॉर्क:ब्लूम्सबरी अकादमिक।
2. हमारी शिक्षा पद्धति कैसी हो? अखंड ज्योति, फरवरी 1957, पृष्ठ 12-34
3. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका 2005
4. ए बी सी डी ई कुक, डेविड(मई 2015)। "सूफ़ी इस्लाम में रहस्यवाद"। ऑक्सफोर्ड रिसर्च इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन। ऑक्सफ़ोर्ड:ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. ए बी हैनसन, एरिक ओ. (2006)। आज अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में धर्म और राजनीति। न्यूयॉर्क:कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
6. प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक भारतीय समाज मे इसकी प्रासंगिकता
7. ए बी फाइंडली, कार्टर वी.(2005)। "इस्लाम और साम्राज्य सेल्जुक से मंगोलों तक"। विश्व इतिहास में तुर्क। ऑक्सफ़ोर्डऔरन्यूयॉर्क:ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. Raza M. Higher Education in India Retrospect and Prospect, New Delhi Association of Indian Universities; c1991.
9. Nurullah, Syed, Naik JP. History of Education in India during the British Period, Bombay, Macmillan; c1951.
10. Government of India, Report of the University Education Commission (1948-49), New Delhi Ministry of Education; c1949.